# भजन

तर्ज... चिनगारी कोई भड़के

चिनगारी रूहों के दिल में जो इश्क की तुमने लगाई

विरहा के झोंके पाकर वो बढ़ने लगी है,हो...वो जलने लगी है

देने आनन्द आत्म को बड़े लाड़ से तूनें लगाई

इस लाड पे वारी जाऊँ बड़ी मेहर करी है,हो...बडी मेहर करी है

1 निजधाम का आनन्द देने जो इश्क की लौ है लगाई
बिछुडी आत्म को प्रीतम निसबत पेहचान कराई
इस लाड के रंग निराले मिला रूह को इश्क खुदाई
इस लाड पे वारी जाऊँ –

(2) विरहा की अग्नि लगी तो रूह इश्क की राह ये आई
याद आई इश्क असल की पिया प्रेमें कण्ठ लगाई
ये आग लगे बड़ी मीठी और बड़ी सुखदाई
इस लाड पे .....

3 लगी आग असल जिनों वतनी वोही इश्क आग रस पीये
बिना निसबत के ना दूजा इस आगे ठहर ना पावे
हम तन हैं धाम धनी के जिनके दिल से ये आई
इस लाड़ पे.....

4 जहां आग ये इश्के –हैयाती निजधाम अखंड अपना है
मेरे प्राण–पिया के दिल में इसका भण्डार भरा है
हम रूई लपटें इसकी इस खेल में हमें दिखाई
इस लाड.....